ह ७२५

व

~~३३१~~

~~२०१~~

४९

श्रीस्वामि शंकराचार्य्य प्रणीत

प्रश्नोत्तरी

मुरादाबादनिवासी गौड़वंशावतंस

श्रीयुत पं० गङ्गाप्रसादजी कृत

भाषाटीका सहित

जिसको

कैलासचन्द्र

मैनेजिङ्ग प्रोप्राइटर फ़र्म

गणेशीलाल लक्ष्मीनारायण ने

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद में

छापकर प्रकाशित किया।

पंचमावृत्ति सं० १९७९

Printed by Kaila-achan..a
at the Lakshmi Narayan Press, Moradabad.

श्रीगणेशाय नमः ।

प्रश्नोत्तरी

अपारसंसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादांबुजदीर्घनौका ॥१॥

भाषा-(प्रश्न) हे गुरो कृपालो, कृपापूर्वक कहिये कि इस अपार संसार सागरमें डूबतेहुए मुझकोशरण क्या है ? (उत्तर) विश्वेश अर्थात् संसारके स्वामी जो ईश्वर उन्हींके चरणारविन्दरूपी नाव है ॥१॥

बद्धो हि को यो विषयानुरागी
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः ।
को वास्ति घोरो नरकः स्वदेह-
स्तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति २

(प्रश्न) संसारमें बँधा कौन है ? (उत्तर) विषयी (प्रश्न) विमुक्ति क्या है ? (उत्तर) विषयत्यागही विमुक्ति है । (प्रश्न)--घोर नरक कौन है ? (उत्तर) अपना देह (प्रश्न) स्वर्ग कौन है (उत्तर) तृष्णा का नाश होना ॥२॥

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः
को मोक्षहेतुः कथितस्स एव ।
द्वारं किमेकन्नरकस्य नारी
का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ३

(प्रश्न) संसार नाशक कौन है? (उत्तर) वेदसे उत्पन्न जो आत्मज्ञान है (प्रश्न) मोक्ष का हेतु क्या है? (उत्तर) आत्मबोध, (प्रश्न) नरक का दर्वाज़ा क्या है? (उत्तर) स्त्री (प्रश्न) स्वर्ग की प्राप्ति करानेवाली कौन वस्तु है? (उत्तर) अहिंसा अर्थात् जीवों को न मारना ॥३॥

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी ।
के शत्रवस्सन्ति निजेन्द्रियाणि
तान्येव मित्राणि जितानि यानि

(प्रश्न) सुखपूर्वक कौन सोता है? (उत्तर) जो समाधि निष्ठ है (प्रश्न) जागता कौन है? (उत्तर) जिसके चित्तमें सत् असत् वस्तुका ज्ञान है। (प्रश्न) शत्रु कौन हैं (उत्तर) अपनी इन्द्रियां और वही जीता हुई इंद्रियां मित्र हैं ४।

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः
को वामृतः स्यात्सुखदा निराशा

(प्रश्न)--संसार में दरिद्री कौन है?(उत्तर)जिसको तृष्णा अधिक है(प्रश्न)--धनी कौन है? (उत्तर)जिस का चित्त सब प्रकारसे संतुष्टहै(प्रश्न)और जीताहुआ मरेके सदृश कौन है?(उत्तर) जो उद्यम रहित है। अर्थात् जो मोक्षके निमित्त यत्न नहीं करता। (प्रश्न) और अमृत क्याहै?(उत्तर)सुखदेनेवाली निराशा ५॥

पाशो हि को यो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री।
को वा महान्धो मदनातुरो यो
मृत्युश्चकोवाऽपयशस्स्वकीयम्

(प्रश्न)--संसार में पाशरूप बंधन क्या है? (उत्तर) ममतारूप अभिमान। (प्रश्न)मदिराकी समान कौन मोहित करती है?(उत्तर)स्त्री(प्रश्न)--और संसार में बड़ा अंधा कौन है?(उत्तर)कामातुर(प्रश्न)-और मृत्यु क्या है? (उत्तर)अपना अपयश ॥ ६ ॥

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव ।
को दीर्घरोगो भव एव साधो !
किमौषधं तस्य विचार एव ॥७॥

(प्रश्न)-संसारमें गुरु कौन है? (उत्तर)-जो हितधर्मकी शिक्षाकरे(प्रश्न)-और शिष्य कौन है? (उत्तर)जो गुरुभक्तहो(प्रश्न) और बड़ा रोग क्या है?(उत्तर)संसारमें बारम्बार जन्म मरणहोना(प्रश्न)-इस ससार रोगकी औषधि क्या है? (उत्तर) परब्रह्म का विचार ॥७॥

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं
तीर्थंपरं किं स्वमनोविशुद्धम् ।
किमत्र हेयं कनकं च कांता
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ८

(प्रश्न)--बड़ा आभूषण क्या है ? (उत्तर) शील अर्थात् उत्तमस्वभाव(प्रश्न)उत्कृष्ट तीर्थ कौन है?(उत्तर) निजमनकीशुद्धता(प्रश्न)इस संसारमें त्याज्य वस्तु क्या है? (उत्तर) धन और स्त्री (प्रश्न) और प्रतिदिन श्रवण योग्य क्या है?(उत्तर) गुरु और वेदवाक्य ॥८॥

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति
सत्संगतिर्दानविचारतोषाः ।
के संति सन्तोऽखिलवीतरागा
अपास्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः ॥ ९ ॥

(प्रश्न) परब्रह्मकी प्राप्तिमें कौन २से साधन योग्य हैं? (उत्तर) सज्जनोंकी सङ्गति दान और परमेश्वर विचार और संतोष (प्रश्न) सज्जन कौन हैं? (उत्तर) जिनको सम्पूर्ण सांसारिक विषयों से विराग हो और मोहको त्यागकर ब्रह्मविचारमें निरन्तर प्रीति हो ॥ ९ ॥

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः ।
कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ॥ १० ॥

(प्रश्न) संसारमें सम्पूर्ण जीवों को ज्वर क्या है? (उत्तर) चिन्ता अर्थात् मानसिक पीड़ा । (प्रश्न) मूर्ख कौन है? (उत्तर) जो विवेकसे विहीन है । (प्रश्न) सम्पूर्ण मनुष्योंको क्या करना उचित है? (उत्तर) शिव और विष्णुकी भक्ति (प्रश्न) संसारमें उत्तम जीवन कौन है? (उत्तर) जो दूषणसे रहित हो ॥ १० ॥

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै
जितं जगत्केन मनो हि येन ११

(प्रश्न)--विद्या कौन है? (उत्तर) जो ब्रह्मगति को देनेवाली है (प्रश्न)-बोध कौनहै?(उत्तर)जो विमुक्ति का कारणहै। (प्रश्न)-लाभ क्या है? (उत्तर)जो आत्म प्राप्ति है। (प्रश्न)-जगत् को किसने जीता है?(उत्तर) जिसने मन को जीता है ॥ ११ ॥

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः१२

(प्रश्न)--संसारमें बड़ा शूर कौन है? (उत्तर) जो मनोज अर्थात् काम करके पीडित न हो (प्रश्न)--प्राज्ञ और धीर समदर्शी जगत् में कौन है ?(उत्तर)जो स्त्रीके कटाक्षोंसे मोहको प्राप्त न हो ॥१२ ॥

विषाद्विषं किं विषयास्समस्ता
दुःखी सदा को विषयानुरागी।
धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारि
कःपूजनीयःशिवतत्त्वनिष्ठः१३

(प्रश्न)-बड़ा विष क्या है? (उत्तर)सम्पूर्ण इंद्रियादि विषय (प्रश्न)-सदा दुःखी कौन है?(उत्तर) जो विषय में अतिप्रीति करता है (पश्न)-संसारमें धन्य कौन है? (उत्तर)जो परोपकारी है(प्रश्न)-पूजा करनेके योग्य कौन है ? (उत्तर) जो ब्रह्मतत्व निष्ठ है ॥ १३ ॥

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्य्यं
किं वा विधेयम्विदुषां प्रयत्नात्।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्ति चिंता१४

(प्रश्न)- ज्ञानी मनुष्य करके सर्वथा क्या अकरणीय है ? (उत्तर) स्त्री पुत्रादि में स्नेह और पाप अर्थात् शास्त्र विरुद्धकर्म(प्रश्न)-और ज्ञानीको सदाक्या उचित है?(उत्तर)सच्छास्त्रपठन करना और सुधर्म्म में प्रीति करना.(प्रश्न)-संसार की जड़ क्या है?(उत्तर)चिंता अर्थात् नित्यअनित्य वस्तुके निश्चय बिना संदेह १४

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्तिकोवा
नार्य्यापिशाच्या न च वंचितोयः
का शृंखला प्राणभृतां हि नारी
दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम् ॥

(प्रश्न)ज्ञानीसे बड़ा ज्ञानी कौन है? (उत्तर) जो पिशाचनीरूप स्त्री करके वंचित नहीं हुआ(प्रश्न)संपूर्ण जीवोंको दृढ बन्धन क्या है ? (उत्तर) स्त्री(प्रश्न) उत्तम व्रत कौन है ? (उत्तर) सबसे दीनता पूर्वक वार्ता करना ॥ १५ ॥

ज्ञातुन्न शक्यं च किमस्तिसर्वै-
र्योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम् ।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा
विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा॥

(प्रश्न)संपूर्ण मनुष्यों करके जानने के योग्य क्या नहीं है ? (उत्तर) स्त्री का मन और उसका चरित्र (प्रश्न) सर्वजनों करके दुस्त्यज क्या है ? (उत्तर) दुराशा अर्थात् विषयादि भोगेच्छा । (प्रश्न)संसार में पशु कौन है?(उत्तर) विद्याविहीन अर्थात् ज्ञान देने वाली विद्या करके रहित ॥ १६ ॥

वासो न संगस्सह कैर्विधेयो
मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः।
मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयम्
सत्संगतिर्निर्ममतेशभक्तिः १७

(प्रश्न) किनके साथ बास और सङ्ग करना न चाहिये? (उत्तर) मूर्ख, पापी और दुष्टोंके साथ. (प्रश्न) मुक्ति चाहने वालेको शीघ्र क्या करना चाहिये? (उत्तर) सज्जनों की सङ्गति और निर्ममता और परमेश्वरकी भक्ति॥ १७

लघुत्वमूलञ्च किमर्थितैव
गुरुत्वमूलं यदयाचनञ्च।
जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म
को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः १८

(प्रश्न) संसारमें छोटाईका कारण क्या है? (उत्तर) अर्थिता अर्थात् मांगना, (प्रश्न) और बड़ाई का कारण क्या है? (उत्तर) अयाचन अर्थात् न मांगना (प्रश्न) संसारमें कौन पैदा हुआ? (उत्तर) जिसका पुनर्जन्म न हो (प्रश्न) मृत कौन है? (उत्तर) जिसकी पुनर्मृत्यु न हो॥ १८॥

मूकोऽस्ति को वा वधिरश्च को वा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी॥

(प्रश्न)संसार मे मूक कौन है?(उत्तर) जो मनुष्य समयपर यथार्थ न कहे (प्रश्न) और बधिर कौन है ? (उत्तर)जो उत्तमवचनको अच्छे प्रकारसे न सुनै (प्रश्न) विश्वास न करनेके योग्य कौनहै?(उत्तर)नारी ॥ १९॥

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयम्
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति ।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्य-
ग्देयं परं किं त्वभयं सदैव॥२०॥

(प्रश्न)एकमुख्यतत्त्वक्या है?(उत्तर)अद्वितीय शिव तत्त्व (प्रश्न) संसार में उत्तम क्या है? (उत्तर) अच्छे आचरण करना (प्रश्न) त्याज्य सुख क्या है?(उत्तर) स्त्री भोग(प्रश्न) देने योग्य क्या है ? (उत्तर) सबको अभय दान देना ॥ २० ॥

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा
काम: सकोपानृतलोभतृष्णा:।
न पूर्य्यते को विषयै: स एव
किं दु:खमूलं ममताभिधानम्॥

(प्रश्न)संसारमें सबसे बड़ाशत्रु कौन है?(उत्तर)काम क्रोध, असत्य और तृष्णा सहित लोभ(प्रश्न)विषयोंसे कौन तृप्त नहीं होता है?(उत्तर)वही काम (प्रश्न)दु:ख का मूल क्याहै? (उत्तर)ममता जिसका नाम है॥२१॥

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य
सत्यं च किं भूतहितं सदैव।
किं कर्म्म कृत्वा न हि शोचनीयं
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम्॥

(प्रश्न)मुखकी शोभा क्या है? (उत्तर) साक्षरता (प्रश्न)संसारमें सत्य क्या है?(उत्तर)।जिस वचन से सबका हित हो (प्रश्न) कौन काम करके सोच करने योग्य नहीं होता? (उत्तर) शिव और श्रीकृष्ण जी का पूजन॥ २२॥

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः
क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव
के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः २३

(प्रश्न) किसके नाश होजाने से मोक्ष होता है ? (उत्तर) मन का चांचल्यधर्म्म दूर होकर चित्तशुद्धि से (प्रश्न) सर्वप्रकारसे किस में भय नहीं है? (उत्तर) विमुक्ति अर्थात् मोक्ष में (प्रश्न) सबसे बड़ा दुःख कौन है? (उत्तर) अपनी मूर्खता (प्रश्न) अच्छे प्रकार किस किस की सेवा करनी चाहिये? (उत्तर) गुरु, देवता और वृद्धों की ॥

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
किमाशु कार्य्यं सुधिया प्रयत्नात्
वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च ॥२४

(प्रश्न) बुद्धिमानों को प्राणान्त समय में यत्नपूर्वक क्या करना चाहिये? (उत्तर) वचन कर्म और मन करके सुखद और यमका भय निवारणकारक श्रीभगवान के चरणकमलों का स्मरण ॥ २४ ॥

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः।
मातेव का या सुखदा सुविद्या
किमेधते दानवशात्सुविद्या॥२५॥

(प्रश्न)-संसार में शत्रु कौन है ? (उत्तर) कुवासना (प्रश्न) सभामें कौन शोभितहोताहै? (उत्तर) जिसकी उत्तम विद्या हो (प्रश्न) माताके सदृश सुख देनेवाली कौन वस्तुहै? (उत्तर) उत्तम विद्या (प्रश्न) दान करनेसे किस पदार्थ की वृद्धि होती रहती है ? (उत्तर) विद्या दान करने से कदापि न्यून नहीं होता है ॥ २५ ॥

कुतो हि भीतिस्सततम्विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च को वा
विपत्सहायाः परिपालका ये २६

(प्रश्न) निरन्तर किससे डरना चाहिये? (उत्तर) लोकापवाद अर्थात् अपयश और संसाररूपी गहनवन से, (प्रश्न) संसारमें अतिबन्धु कौनहै? (उत्तर) जो विपत्तिमें सहायकरै (प्रश्न) पिताकौनहै? (उत्तर) जो पालनकरै २६

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-
त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे २७

(प्रश्न)-जिसको जानकर कोई वस्तु जाननेको शेष न रहे ऐसा क्या है ? (उत्तर) सुख, बोध, रूप अर्थात् केवल शिवस्वरूप ज्ञान, (प्रश्न) और जिसके जानने से सब जगत् ज्ञात होय ऐसा क्या है ? (उत्तर) सर्वात्मा परिपूर्ण ब्रह्म ॥ २७ ॥

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्संगतिर्ब्रह्मविचारणा च ।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयस्सर्वजनैर्मनोजः २८॥

(प्रश्न)--संसार में दुर्लभ वस्तु क्या है ? (उत्तर) सद्गुरु, सत्संगति और ब्रह्मविचार (प्रश्न) सम्पूर्ण वस्तुका त्याग करनेवालाक्याहै?(उत्तर)शिवात्मबोध अर्थात् कल्याणरूप ज्ञान(प्रश्न)सर्वमनुष्योंकरकेदुर्जय क्या है ? (उत्तर) मनसे उत्पन्न होनेवाला काम॥

पशोःपशुः को न करोति धर्म्मं
प्राधीतशास्त्रोऽपिनचात्मबोधः
किन्तद्विषम्भाति सुधोपमं स्त्री
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः॥

(प्रश्न)--संसारमें पशुसे विशेष पशु कौनहै?(उत्तर) जो धर्म नहीं करता और शास्त्र पढ़करभी आत्मज्ञान को प्राप्त नहीं होता(प्रश्न)ऐसा विष क्या है जो अमृत सदृश विदित होता है? (उत्तर) स्त्री (प्रश्न) और कौन शत्रु मित्र तुल्य ज्ञात है?(उत्तर)पुत्रादिक॥२१॥

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-
र्दानं परं किं च सुपात्रदत्तम्।
कण्ठं गतैरप्यसुभिर्न कार्यं
किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा॥

(प्रश्न)--संसारमेंविद्युत्केसदृशकौनवस्तु प्रतिचञ्चल है?(उत्तर)धन युवाअवस्था और आयु(प्रश्न)उत्तमदान कौनहै?(उत्तर)जोसुपात्रकोदियाजाय(प्रश्न)प्राणकंठ-गत प्राप्तहोकरभी क्या न करना चाहिये?(उत्तर)अधर्म (प्रश्न)औरसर्वदा क्याकरनाचाहिये?(उत्तर)शिवपूजन

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
संसारमिथ्यात्मशिवात्मतत्वम्
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
क्वास्था न कार्या सततं भवाब्धौ॥

(प्रश्न) -अहर्निश क्या विचारना चाहिये? (उत्तर) संसार मिथ्या है और शिवतत्त्व ब्रह्मसत्य है (प्रश्न) कर्म कौनहै? (उत्तर) जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो (प्रश्न) और निरन्तर कहां विश्वास न करना चाहिये ? (उत्तर) संसारसागर में ॥ ३१ ॥

कण्ठं गता वा श्रवणं गता वा
प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला।
तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं
रमेशगौरीशकथेव सद्यः ॥३२॥

प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला को पढे अथवा सुने तो विद्वान् उत्तम मोद को प्राप्त होय जैसे हरि हर की कथा से ॥ ३२ ॥

इति प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला समाप्ता।

...मिली। इसमें ...

मूल संस्कृत भी है। उसके नीचे प्रत्येक श्लोक का अ...
भावार्थ सरल हिंदी में लिख दिया गया है संस्कृत भ...
पूर्वक छपा है। इस संस्करण में एक बात बड़े काम...
श्लोकों के पदों पर, अन्वय के अनुसार यथाक्रम १,...
अंक लिख दिये गये हैं। अंक-क्रम से उन्हें पढ़ने...
अन्वय होता है, अर्थात वह पद्य से गद्य में परिणत है...
कारण थोड़ी भी संस्कृत जानने वाले बिना हिन्दी टीका ...
भाव बहुत कुछ समझ सकते हैं। श्रीमद्भागवत की अ...
टीकाओं के आधार पर संस्कृत श्लोकों का जो अर्थ, इस पुस्...
में दिया गया है वह भी पुराणकार के आशय का पूरा द्यात...
इस की दूसरी खूबी है तीसरी खूबी यह है कि अनुवाद...
बहुत ही सीधा सादा है। ... पुस्तक बड़ी बड़ी दो जिल्दों में है...
और सुदृढ़ जिल्द बँधी हुई है, छपी भी अच्छी है। दोनों जिल्दें...
पृष्ठ संख्या कुछ कम तीन हजार है मूल्य दोनों जिल्दों का ...
६) रुपया है। " डाकव्यय २=) रु०

पता-लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद.